संस्कृत सदाचारः VIII
षष्ठः पाठः

Page No.
Date : 23/04/2020

(1) यस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः
वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते।

प्रसंग → प्रस्तुत श्लोक हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'रुचिरा' भाग-दो के 'सदाचारः' नामक पाठ से लिया गया है, इसके माध्यम से मनुष्य के अच्छे व्यवहार के महत्व को बताया गया है-

सरलार्थ → जिस देश में उपवर्गों के साथ वर्गों का जो परम्परा से चला आ रहा आचरण (व्यवहार) होता है। वही ~~बात~~ सदाचार कहलाता है।

(2) श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।

सरलार्थ → कल का कार्य हमें आज ही करना चाहिए। दोपहर के बाद करने वाला कार्य दोपहर से पहले ही कर लेना चाहिए। मृत्यु किसी की प्रतीक्षा (इंतज़ार) नहीं करती इसलिए हमें जो सही नहीं हो ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

(3) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यमप्रियम्
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।

सरलार्थ →